जनवरी–फरवरी 2022

ग्रामीण शिक्षा केन्द्र

मोरंगा

बाल पत्रिका

इस बार

खेल खिलाड़ी

5 स्कूल जेल नहीं

उड़ान

7 सूरज दादा
चाँद तारे

8 कोरोना

9 हल्लम हाथी

10 पढ़ाई

ज्ञान विज्ञान

11 प्रकाश का परावर्तन

12 विटामिन

जोड़-तोड़

13 जादुई बीज

कलाकारी

17 किचन गार्डन

बात लै चीत ले

19 चिड़िया का बच्चा

20 आर्शीवाद

21 माथापच्ची/हीहीही-ठीठीठी

22 कुछ हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ

चंदा, उम्र-5 वर्ष, बावरी बस्ती स. मा.

सम्पादन : विष्णु गोपाल
सहयोग : उदय पाठशालाओं के बच्चे व शिक्षक
डिज़ाइन : अश्विनी कुमार पंकज
प्रूफ़ : सुरेश चंद
वितरण : लोकेश राठौर
आवरण चित्र : **मुरली**, उम्र-5 वर्ष, बावरी बस्ती स.मा.
वर्ष 13 अंक 139-140

मोरंगे' का प्रकाशन यात्रा फाउण्डेशन-आस्ट्रेलिया, आशा फोर एज्यूकेशन, पोर्टिकस-नीदरलेण्ड, व एच.टी. पारेख के सहयोग से हो रहा है।

प्रबंधन
शुभम गर्ग
निदेशक,
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र समिति

पत्रिका का पता
मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
रणथम्भौर रोड़, सवाई माधोपुर
(राजस्थान) 322001
फोन: 07462-220957

अक्षय सैनी, कक्षा-7, उच्च प्राथमिक विद्यालय कुतलपुरा मालियान

'ग्रामीण शिक्षा केन्द्र' राजस्थान राज्य के सवाई माधोपुर जिले में स्थित एक गैर-सरकारी (निजी) संस्था है। ग्रामीण शिक्षा केन्द्र का जन्म 1996 में हुआ था और इसका पंजीकरण 'राजस्थान सोसाइटी अधिनियम-1958' के तहत एक संस्था के रूप में किया गया। जी.एस.के. को संस्थागत बनाने का विचार समुदाय की मांग से उभरा ताकि क्षेत्र की आगामी पीढ़ी जीवन में आजीविका जैसी आवश्यक क्षमताओं और जीवन की कठिनाइयों में निष्पक्ष रूप से स्वस्थ निर्णय लेने में सफल रहे। सामूहिक रूप से हमने रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आस-पास रहने वाले बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए स्कूल शिक्षा कार्यक्रम शुरू करने के बारे में सोचा।

हमने अपना पहला प्रयास और अपनी पहली स्कूली यात्रा की शुरुआत वर्ष 2004 में गाँव-जगनपुरा (खवा) में बबूल के पेड़ के नीचे से की। गाँवों के बच्चों और समुदाय के सहयोग से उदय सामुदायिक विद्यालय की शुरुआत हुई। गाँव वालों ने अपनी जमीन, फसल, श्रम, समय, पैसा और अपने अनुभव से विद्यालय को आगे बढ़ाया। इसके पश्चात 2007 में बोदल गाँव में, 2009 में फरिया गाँव में और 2014 में गिरिराजपुरा गाँव में उदय सामुदायिक पाठशाला की सफलतापूर्वक शुरुआत की गई। ये तीनों उदय पाठशाला रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान की परिधि पर स्थित है। राष्ट्रीय उद्यान में जानवरों, पक्षियों और सरिसृपों की एक विशाल विविधता शामिल है। जिसमें से बाघ सबसे अधिक प्रचलित है। वन्यजीवन का संबंध इन बच्चों और रहने वाले समुदाय के लिए एक महत्वपूर्ण घटक है, जो इनके रहन-सहन, खान-पान, आजीविका, संस्कृति, रीति-रिवाज, बोली-भाषा और व्यवहार के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है। जिसमें इनकी सैंकड़ों पीढ़ियों का ज्ञान, कौशल और अनुभवों का एक विशाल

भंडार है। इतने समृद्ध ज्ञान की अनदेखी कर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का दावा करना खौखला साबित होगा। अतः ग्रामीण शिक्षा केन्द्र इनके इसी ज्ञान और परिवेशीय अनुभवों को आधार बनाकर भावी शिक्षा से जोड़ने का प्रयास कर ही रही है।

क्षेत्र में हम पूर्व-प्राथमिक, प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय शिक्षा में काम कर रहे हैं। पिछले वर्षों में 'उदय सामुदायिक पाठशाला' रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आस-पास के सीमांत समुदाय और उनके बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के क्षेत्र में जाना माना नाम बन गया है। स्कूलों ने खुद को समुदायों द्वारा स्वीकृत और सराहनीय गुणवत्तापूर्ण शिक्षा केन्द्रों के रूप में प्रदर्शित किया है। इस मॉडल ने समुदायों को राजकीय विद्यालयों से समान गुणवत्ता की शिक्षा की कल्पना करने और मांगने के लिए प्रोत्साहित किया।

मॉडल को आगे बढ़ाते हुए वर्तमान में हमारे आउटरिच कार्यक्रम - 'विस्तार' को रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आसपास स्थिति गाँवों में वर्ष-2011 में 70 राजकीय विद्यालयों में शुरू किया गया। इसी माध्यम से हम समुदायों, सरकार, शिक्षाविदों, अन्य संगठनों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के पहलुओं को बढ़ावा देने, सीखने और समझने में मदद कर रहे हैं और नई शिक्षा पद्धति की जड़े मजबूत करके उन्हें फैलाने की कोशिश कर रहे हैं। ग्रामीण शिक्षा केन्द्र द्वारा समर्थित उदय पाठशालाओं को शिक्षा में योगदान के लिए राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया जा चुका है। हमारा हर कदम संस्था के विजन और मिशन की तरफ बढ़ रहा है।

इसी कड़ी में एक प्रयास, बच्चों की रचनात्मक, कलात्मक क्षमता और कौशलों को बढ़ावा देने हेतु बाल पत्रिका 'मोरंगे' का सफलतापूर्वक प्रकाशन किया जा रहा है। बाल पत्रिका मोरंगे बच्चों के काम को व्यापक समुदाय तक पहुँचाने और उनसे जुड़ने का मंच प्रदान करती है। हमारे पाठकों और समर्थकों का सहयोग और जुड़ाव हमें लगातार प्रयास करने के लिए प्रेरित करता है।

धन्यवाद।

बिंतोषी गुर्जर, शिक्षिका

अभिषेक, कक्षा-7, उच्च प्राथमिक विद्यालय कुतलपुरा मालियान

खेल खिलाड़ी

स्कूल जेल नहीं

कोरोना काल से पहले बच्चों को स्कूल जाना जेल जाने जैसा लगता था। कुछ बच्चे तो स्कूल जाने से बचने के लिए नये नये बहाने बना लेते थे। पर कोरोना के लंबे लॉकडाउन ने बच्चों को स्कूल के बारे में बनी नकारात्मक धारणा पर फिर से सोचने का अवसर दिया।

लॉकडाउन में हम बच्चों को उनके घर पर ही पढ़ाने जाते थे। सभी शिक्षक अलग-अलग समुदाय में अलग-अलग बच्चों के साथ कार्य करते थे। एक दूसरे समुदाय के बच्चे जो एक साथ विद्यालय में उठते-बैठते-पढ़ते, खाते-पीते, खेलते-लड़ते थे उनका आपस में मिलना जुलना सब बंद हो गया था। हम जब भी समुदाय में जाते सबसे पहले बच्चे यही पूछते थे कि मेडम स्कूल पर कब बुलाओगे। अब तो ग्राउंड पर खेले हुए बहुत समय हो गया। लेकिन क्या कहते हम भी सरकार के आदेशों से बंधे हुए थे।

लेकिन वो दिन भी आखिर आ ही गया जिसका बच्चों व शिक्षकों को बड़ी बेसब्री से इंतजार था। जिसकी खबर समाचार पत्रोंव टीवी के माध्यम से पहले ही बच्चों व बड़ों में फैल चुकी थी। सभी बच्चे बहुत खुश थे।

अगले दिन जैसे ही मैं समुदाय में पहुँची तो बच्चे दौड़ते-हाँफते मेरे पास आये और कहने लगे

मैडम कल से तो हमारे स्कूल खुल जायेंगे ना?"

"कल से तो खेलने और पढ़ने स्कूल पर ही जायेंगे?" बच्चे बिना रुके एक के बाद एक अपनी बात बोले जा रहे थे।

महेन्द्र भी कहने लगा, "तब तो कल से आप खेल भी करवाओगी ना मैडम।" मेरे जवाब देने का कोई मौका नहीं, सिर्फ उन्हें बस अपनी बात बोलनी थी।

तभी मैंने उनसे कहा, "अब मुझे भी बोलने दो। तभी तो मैं जवाब दूंगी।" तब मैंने उन्हें बताया कि तुमने सही सुना है। कल से तुम्हारे स्कूल खुल जायेंगे और तुम्हें वहीं पढ़ाया जायेगा। कल से ही तुम्हारा ग्राउंड भी नियमित चलेगा। और कल से तुम्हे जल्दी मैदान पर आना है।

बच्चे खुशी से नाचने लगे। वे बहुत खुश थे। मैंने अपना काम खत्म किया और मैं वहाँ से चल दी।

दूसरे दिन जब मैं सुबह 07:45 बजे विद्यालय पहुँची तो मैंने देखा कि बच्चे मुझसे पहले ही मैदान पर पहुँच चुके थे। सभी बच्चे एक-दूसरे से मिलकर बहुत खुश थे।

बच्चे फुटबॉल में हवा भरकर फुटबॉल को मैदान में ले जा चुके थे। मेरे ग्राउंड पर जाने से पहले तीन-तीन की पंक्ति में बिना समय बर्बाद किये जोगिंग के लिए तैयार हो चुके थे।

तभी बलराम बोला, "मैडम जोगिंग शुरु करें?" मेरा इशारा पाते ही सभी ने जोगिंग शुरु कर दौड़ लगाई। वार्मअप करने के पश्चात हैण्डबॉल व फुटबॉल मैदान पर खेलने लगे।

मैं उनको देखकर सोच रही थी कि जिन बच्चों को स्कूल पर जाने के लिए मशक्कत करनी पड़ती थी वे आज बिना कहे, बिना बुलाए खुशी-खुशी स्कूल आकर हर काम मन लगाकर कर रहे है। उन्हें देखकर ऐसा लग रहा था मानो पिंजरे से पंछी को आजाद किया गया हो।

आज सभी बच्चे मैदान पर स्वतंत्र पंछी की तरह इधर-उधर भाग दौड़ करने में कितना सुकुन महसूस कर रहे हैं। अब बच्चे छुट्टियों की नहीं सोचते। घर नहीं रुकना चाहते। लॉकडाउन ने घर को जेल और स्कूल को मनपसंद जगह बना दिया है।

ममता शर्मा, शिक्षिका, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार।

दीपेश मीना, कक्षा-7, उच्च प्राथमिक विद्यालय खाण्डोज

सूरज दादा

सूरज दादा चमको तुम
नया सवेरा लाते रहो
उजियाला फैलाते रहो
जहाँ कहीं भी रहते लोग
रखते सबको तुम निःरोग
अच्छे लगते हमको तुम
सूरज दादा चमको तुम
आसमान में रहते रहो
रोज समय पर आते हो
रोज भगाते हमको तुम
सूरज दादा चमको तुम।

पदमा माली, कक्षा-8, राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय जमुलखेड़ा

चाँद तारे

आसमान में तारे
देखो कितने सारे
चमक-चमक कर मन को भाये
ये दिन में नहीं रात में आये
देखो ये एक छोटी चीज
चमकाती है पूरा देश
तारों की दुनिया के बीच
रहते चंदा मामा जी
चंदा मामा इतने प्यारे
सबसे लगते न्यारे-न्यारे
ये जग के हैं राजदुलारे
बस बच्चे कहते हैं मामा
कहाँ गया मेरा प्यारा मामा।

कोमल, कक्षा-4,
उदय सामुदायिक पाठशाला कटार।

निरमा सैनी, कक्षा-10, उमंग

कोरोना

हर घर में यही नारा है
कोरोना को हराना है
इसने कैसा चक्कर चलाया
बड़े-बड़ों को घर में बैठाया
अब इसको भी भगाना है
फिर से घूमने जाना है

संगीता, कक्षा-7, उच्च प्राथमिक विद्यालय कुतलपुरा मालियान

राजकमल, कक्षा-7,
उच्च प्राथमिक विद्यालय कुतलपुरा मालियान

थाली से सब्जी गायब
मुँह से पान और मावा गायब
महंगाई का जमाना है
फिर से पनीर पापड़ खाना है
मास्क लगाते रहना है
कोरोना को हराना है।

सुगना सैनी, कक्षा-7, राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय जमुलखेड़ा

काजल बैरवा, उम्र-12 वर्ष,
उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

नरेन्द्र नायक, उम्र-5 वर्ष, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

हल्लम हाथी

एक बार की बात है। एक जंगल में एक हाथी रहता था। उस हाथी का नाम हल्लम था। उसका हल्लम नाम जंगल के जानवरों ने रखा था। हल्लम अपने नाम की तरह ही हल्लम था। वह बहुत खाता था और धीरे-धीरे चलता था। उसकी खाने की आदत से परेशान होकर उसकी मां उसे खाना बहुत कम देती थी। इसलिए वह चुपके से खाना चुराकर खाता था।

जंगल में एक बार अकाल पड़ गया और हल्लम की खाने की आदत के कारण उसकी माँ को दूसरे जंगल में घांस लेने जाना पड़ता था। हल्लम का एक दोस्त था। उसका नाम चल्लम था। चल्लम कम खाता था और खूब तेज चलता था। वह अपनी माँ के साथ दूसरे जंगल में खाना लेने जाता था।

हल्लम ने एक दिन चल्लम से कहा, "चल्लम तुम मेरी तरह खाना खाया करो और जंगल में क्यों जाते हो? यहाँ पर ही रहा करो।"

चल्लम ने हल्लम से कहा, "माँ को परेशानी होती है इस लिए जाता हूँ तुम भी तुम्हारी माँ के साथ क्यों नहीं जाते हो? तुम्हारी माँ को बहुत मेहनत करनी पढ़ती है और तुम ज्यादा भी तो खाते हो। तुमने कभी सोचा है कि तुम्हारी माँ को कितनी तकलीफ होती होगी।"

हल्लम को एक सीख मिली। अब हल्लम रोज अपनी माँ के साथ जंगल में जाता और उसकी खाना लाने में मदद करने लगा। कुछ समय बाद उनके जंगल का अकाल हटा और हरियाली छा गई तो उन्हें अब कहीं जाने की जरूरत नहीं पड़ी। हल्लम की माँ हल्लम के बदलाव को देखकर बहुत खुश हुई।

प्रिया गुर्जर, कक्षा-7, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

पढ़ाई

एक बार की बात है। एक छोटी सी लड़की थी। वह अपनी दादी के यहाँ एक छोटे से घर में रहती थी। बूढ़ी दादी बहुत गरीब थी इसलिए उसे पढ़ा नहीं सकती थी। गाँव के सभी बच्चे पाठशाला में पढ़ने जाते थे। वह लड़की भी पाठशाला जाने के लिए जिद करती थी। परन्तु उसकी दादी गरीब होने के कारण उसकी सभी मांगे पूरी नहीं कर पाती थी। ऐसी बातों से नाराज होकर वह लड़की रोड़ के किनारे जा बैठती और वहाँ बैठकर वह रोने लगती।

गोलमा गुर्जर, उम्र-14 वर्ष, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

पाठशाला जाने वाले बच्चे उसे आते जाते चिढ़ाते। दुःखी होकर वह लड़की और ज्यादा रोने लगती। उसकी दादी माँ से यह सब देखा नहीं जा रहा था। तो उसके मन में एक विचार आया कि मैं आज से रद्दी किताबें खरीदने व बेचने का काम करूंगी और अपनी पोती को पढ़ाऊंगी। उसने उस दिन से यह काम शुरू कर दिया। उसने अपनी कमाई से किताबें खरीद कर अपनी पोती को दे दी। ऐसे करते-करते कई साल गुजर गये। वह नन्हीं लड़की अब कक्षा 10वीं में पढ़ने लगी थी। उसका पढ़ाई में भी बहुत ध्यान था। उसकी दादी उसी तरह उसे पढ़ाती रही। जब उसे रद्दी बेचने में कोई फायदा नही दिखाई दिया तो उसे एक तरकीब सूझी। उसने रद्दी को गला कर उसकी सुंदर-सुंदर डिजाइन बनाने लगी। उस पर कलर करके बाजार में अच्छे मुनाफे से बेचने लगी। धीरे-धीरे उनका गुजारा इस तरह चलता रहा।

एक दिन उस लड़की की नौकरी लग गई। वह एक शिक्षिका बन कर वहीं गाँव में ही गरीब बच्चों को पढ़ाने लगी।

सफेदी गुर्जर, समूह-सागर, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।

कोमल, उम्र-10 वर्ष, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

ज्ञान विज्ञान

प्रकाश का परावर्तन

आज हमारे शिक्षक तरुण जी ने हमें एक खेल खिलाया। जिसमें उन्होंने हमें एक दीवार के सामने अर्द्ध चन्द्राकार आकृति में बैठा दिया। सभी बच्चों को एक बॉल दिखाते हुए कहा कि आपको यह बॉल जमीन को लगाते हुए आपके सामने जो दीवार है उस पर मारिए। देखते हैं दीवार से टकराने के बाद यह बॉल किसके पास जाती है।

सभी बच्चें और मैं यही सोच रही थी कि बॉल दीवार से टकराने के बाद वापस मेरे पास ही आयेगी। परन्तु हर बार अलग ही हो रहा था। हम सभी बच्चों ने बारी-बारी से जमीन के सटाते हुए बॉल को दीवार पर मारने का कार्य किया। बॉल दीवार से टकराने के बाद हमारे पास न आकर हमसे दूर बैठे बच्चे के पास जा रही थी। हम बॉल जिस दिशा में भेज रहे थे वापस आते समय उसकी दिशा विपरीत हो जा रही थी। परन्तु बलराम के साथ जो हुआ वो किसी के साथ नहीं हुआ।

दीवार में सामने बैठे बलराम को बॉल मिली तो उसने भी सब की तरह जमीन से सटाते हुए बॉल को दीवार से टकराया। इस बार कहीं और नहीं जाकर बॉल वापस उसी के पास आ गई। जबकि बलराम के दायें बायें बैठे बच्चों की बॉल हमेशा दूसरी तरफ जाती। ठीक से बताऊ तो दायें वाले बच्चे की बॉल बायीं दिशा एवं बायी दिशा वाले बच्चे की बॉल दायीं दिशा वाले बच्चे के पास गई। जब हमसे शिक्षक ने पूछा ऐसा क्यों हो रहा है या किस वजह से हो रहा है? तब हम सभी बोले, "केवल सामने से मारी गई बॉल ही उसी दिशा में वापस आई। शेष बॉल जिस दिशा से आई उसके विपरीत दिशा में चली गई।" इसके अलावा शिक्षक ने और पूछते हुए कहा और क्या हुआ? तब मैं बोली "बॉल जितने डिग्री कोण से आ रही थी उतने ही डिग्री कोण से वापस जा रही है।"

शिक्षक ने उसी समय अपनी विज्ञान की पेटी से समतल दर्पण एवं लेजर लाईट निकाल कर सबको दिखाया। इसी तरह प्रकाश की किरण समतल दर्पण से टकराती है तो टकराने के बाद उसी माध्यम में वापस चली जाती है उसे प्रकाश का परावर्तन कहते हैं। इसी प्रकार से हमारे शिक्षक ने खेल के माध्यम से हमें प्रकाश का परावर्तन समझाया।

काजल, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार।

विटामिन

आओ बच्चों सीखें ज्ञान
विटामिन का करो ज्ञान
एबीसीडी बड़े महान
इन पर है सबको अभिमान
गाजर खाओ ए को पाओ
आंखों की ज्योति चमकाओ
दूध दही तुम खाओ रोज
बैरी-बैरी को करो इग्नोर
दांत मसूड़े जब हो कमजोर
खट्टे फलों का करो उपयोग
विटामिन सी के अच्छे स्त्रोत
अब तुम हो जाओ मेंच्योर
विटामिन डी को तुम मत भूलो
धूप में बैठो बाहर निकलो।

जगदीश कोली, शिक्षक,
उदय सामुदायिक पाठशाला कटार।

मुस्कान, उम्र-9 वर्ष, बावरी बस्ती स. मा.

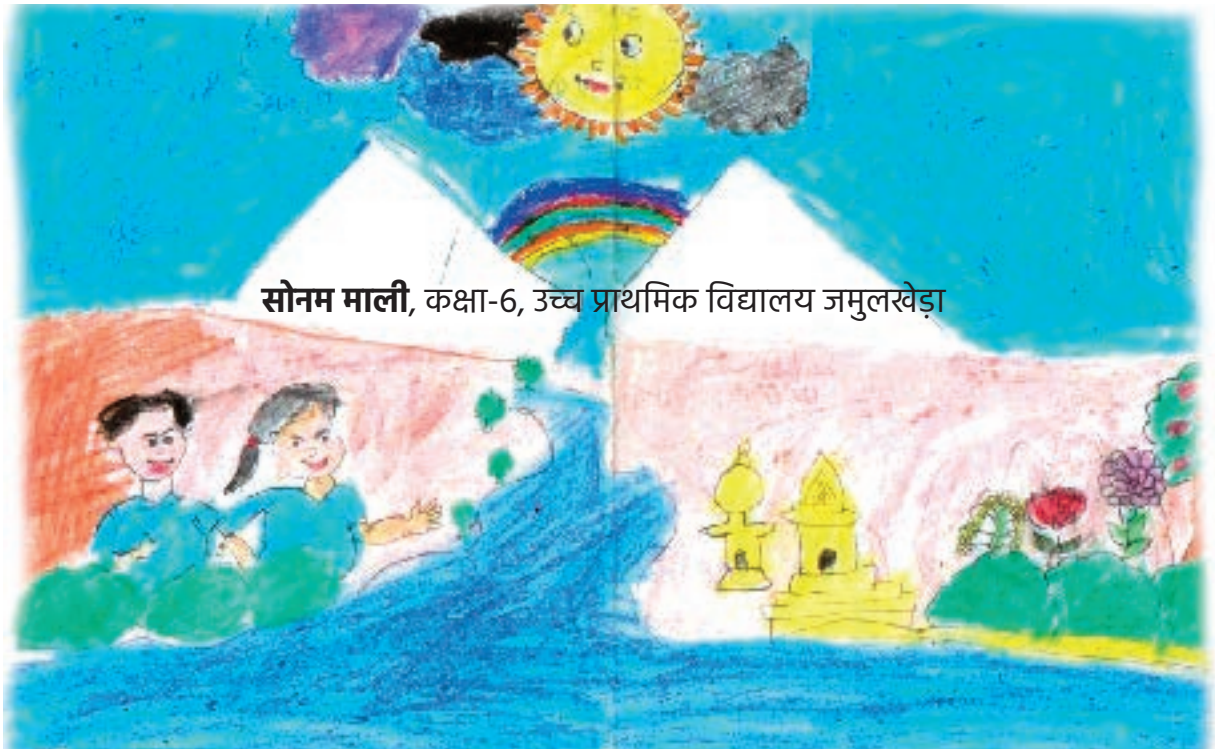

सोनम माली, कक्षा-6, उच्च प्राथमिक विद्यालय जमुलखेड़ा

जादुई बीज

सर्दियों का मौसम था। जैक नाम का एक मस्तमौला आदमी सड़क पर चला जा रहा था। उसे काफी भूख लगी थी। तभी अचानक उसे एक ऐसा बूढ़ा आदमी मिला जिसे उसने पहले कभी नहीं देखा था। बूढ़े आदमी ने एक हाथ में लकड़ी की मोटी लाठी थी और दूसरे हाथ में 2 बड़े सुनहरे बीज थे।

"मैं एक जादुगर हूँ और यह बीज तुम्हारे लिए हैं।" बूढ़े आदमी ने जैक को 2 सुनहरे बीज देते हुए कहा।

"यह बीज जादुई है" बूढ़े ने कहा। "एक बीज को आग में भून कर खा लेना। उसके बाद तुम्हे पूरे एक साल तक भूख नहीं लगेगी। दूसरे बीज को मिट्टी में बो देना और उसकी सम्भाल कर हिफाजत करना। वो बीज उगेगा और पतझड़ के समय उसमें से दो बीज दुबारा पैदा होंगे।"

जैक ने जादूगर के बताए अनुसार ही किया। अगली वसंत बीज में अंकुर फूटा। बड़ा होकर वो एक बड़ा पौधा बना। सर्दियों में उसे पौधे से दो बीज मिले। जैक ने एक बीज भूनकर खाया और दूसरे को जमीन में बो दिया।

गर्मियों में उस पौधे में दो सुंदर फूल खिले। कुछ समय बाद फूलों की जगह दो फल उग आए। पतझड़ में उन 2 फलों में से 2 सुंदर सुनहरे बीज निकले - बिल्कुल वैसे ही जैसे जादुगर ने दिए थे।

उसके अगले साल भी एक पौधा उगा, उसमें 2 फूल लगे, जो दो सुंदर फलों में बदले और उनसे दो सुनहरे सुंदर जादुई बीज पैदा हुए।

अगले साल भी पिछले साल की तरह फूल खिले, फल लगे अैर उनसे दो बीज निकले। जाड़ों में जैक ने दुबारा से एक बीज को भूना अैर दूसरे को जमीन में बो दिया। पतझड़ आई और दुबारा उन फलों में से सुनहरे बीज निकले। सर्दियों में जैक ने फिर एक बीज को भूनकर खाया और दूसरे को जमीन में बो दिया।

अगले साल भी जैक आराम से बैठा देखता रहा। दुबारा फिर एक पौधा उगा, उसमें फूल खिले, फल लगे और उसमें से दो बीज निकले। पहले जैसे ही जैक ने एक बीज खाया और दूसरा जमीन में बो दिया। उसके अगले साल भी वही बात हुई। फिर एक पौधा उगा, उसमें फूल खिले, फल लगे और उसमें से दो बीज निकले। पहले जैसे ही जैक ने एक बीज खाया और दूसरा जमीन में बो दिया।

बार बार की प्रक्रिया ने जैक को सोचने पर मजबूर किया। "हर साल वही बात हो रही है। इस तरह कब तक चलेगा?" उसने खुद से पूछा, "इस साल मैं बीज खाऊंगा ही नहीं और दोनों बीजों को बो दूंगा।" "मैं सर्दियों में इधर-उधर से कुछ जुगाड़ करके अपना पेट भर लूंगा।"

फिर जाड़े के मौसम में जैक ने दौनों बीजों को बो दिया। उसने काफी मेहनत से उनकी देखभाल की।

अगले साल- यह पहला साल था जब उसने दोनों बीजों को एक साथ बोया था। आपके खयाल से उस साल क्या हुआ?

वसंत में 2 पौधे निकले जिनसे पतझड़ में 4 बीज पैदा हुए। सर्दियों में जैक ने एक बीज खाया और बाकी 3 को जमीन में बो दिया।

दूसरे साल वसंत में 3 पौधे उगे, जिनसे पतझड़ में 6 बीज निकले। सर्दी के मौसम में जैक ने एक बीज खाया और बाकी 5 बीज बो दिए। कौए और गौरइया बीज ना खाएं। उन्हे भगाने के लिए जैक ने एक "शोर मचाने वाली" जुगाड़ भी बनाई। तेज हवा चलने पर इस जुगाड़ की आवाज से चिड़िया घबरा जाती।

अगले साल यानी तीसरे साल जैक के बाग में कितने फल उगेंगे?

सर्दियों में जैक ने 9 बीज बोए। उसने एक बीज को भूनकर खाया।

उसके अगले साल- यानी चोथे साल - वसंत में सारे बीजों में से अंकुर फूटे और पतझड़ में 18 फलों में से 18 सुंदर सुनहरे बीज निकले। उसने एक बीज खाया और काकी 17 को बो दिया।

अगले साल यानी पांचवे साल- वसंत में फिर अंकुर निकले और पतझड़ में बीज बने। उस जाड़े के मौसम में जैक ने एक बीज खाया और बाकी को जमीन में बो दिया।

उसने कितने बीज बोए?

अगले साल - यानी छठे साल भी वसंत में सभी बीज अंकुरित हुए। उस साल इतने पौधे उगे कि जैक न उन्हे गिनने की कोषिष भी नहीं की। जब वो बीजों की फसल को इकठ्ठा कर रहा था तब एक भली नौजवान युवती वहां आई। उसका नाम एलिस था। वो जैक की मदद के लिए वहां रुक गई।

उस साल कितने बीज उगे? जैक और एलिस ने तैयार फसल से एक एक बीज भूनकर खाया। फिर उन्होने बाकी बीजों को बो दिया।

उन्होने कितने बीज बोए?

अगले साल बसंत में - यानी सातवें साल भी सारे बीज उगे और पतझड़ में उन फलों में से बहुत सारे बीज निकले। सर्दियों में जैक और एलिस ने शादी की और उसके लिए दावत भी दी। उपहार स्वरूप उन्होने 5 मेहमानों को दो दो सुनहरे जादुई बीज दिए। सभी मेहमानों ने खुशी के इस दिन की याद में एक बीज को बचाकर रखा। जैक और एलिस ने एक एक बीज खाया। उस साल उन्होंने एक छोटी कोठरी भी बनाई और उसमें 16 बीजों को संभाल कर रख दिया। बाकी बीजों को उन्होंने बो दिया।

उन्होंने कितने बीज बोए?

अगली बसंत - आठवे साल बहुत से बीज अंकुरित हुए और उनमें से बहुत सारे बीज निकले। अब क्योंकि उनके पास बहुत सारे बीज हो गए थे इसलिए उन्होंने कुछ बीजों को बाजार में बेचने की बात सोची। उन्होंने कोठरी से पिछले साल के बीजों को निकाला और कुल मिलाकर 60 बीज बेचने के लिए बाजार गए। 34 नए बीजों को उन्होंने कोठरी में रखा। उन्होंने एक एक बीज खाया औ बाकी बीजों को जमीन में बो दिया।

शिवानी मीना, उमंग

उन्होंने जमीन में कितने बीज बोए?

अगला साल नौवां साल था। वसंत में बहुत से अंकुर निकले जिनसे पतझड़ में बहुत से बीज बने। उस वर्ष उनके एक बच्चे का जन्म हुआ। जाड़ों में उन्होने कुल मिलाकर 3 बीज खाए- क्योंकि हरेक ने एक एक बीज खाया। अब उनके पास बीजों का बहुत स्टॉक हो गया था। इसलिए उन्होने गोदाम के बीज भी निकाले और कुल मिलाकर 100 बीजों को बेचने के लिए बाजार गए। उन्होने नई फसल के 51 बीजों को कोठरी में रखा और बाकी बचे बीजों को बो दिया।

उन्होने कितने बीज बोए?

अगला साल दसवां साल था। क्योंकि बच्चा बड़ा हो रहा था इसलिए जैक और एलिस ने एक

नया और बड़ा घर बनाया। पतझड़ में उनका खेत जादुई बीज देने वाले पौधों से भर गया। जल्द ही नई फसल को काटने का समय आने वाला था। परंतु अचानक, "हे भगवान" जैक ने कहा, "देखो कितनी तेज हवा चलने लगी है।" वो एक भीषण तूफान था। तूफान इतना भयानक होगा इसकी उन्हें बिल्कुल उम्मीद नहीं थी। फिर नदी में बाढ़ आई और पानी तेजी से आबादी वाले इलाके में फैलने लगा। घर को पानी में बहने से रोकने के लिए जैक ने उसे एक पेड़ से बांध दिया। फिर उसने अपनी गाय को लकड़ी की गाड़ी में ऊपर खींच लिया। गाड़ी अब पानी में नाव जैसे तैर रही थी। पानी से बचने के लिए एलिस बच्चे के साथ घर की छत पर दौडकर गई। जैक बड़ी मुश्किल से बीजों की एक छोटी थैली को बचा पाया। उसने थैली को पेड़ से लटका दिया।

कितना भयानक तूफान था। तेज हवा के झोकों में बड़े बड़े पेड़ भी पत्तों की तरह कांप रहे थे। धुंआधार बारिश हो रही थी। कुछ ही देर में पूरा खेत विशाल समुद्र में बदल गया। रात के अंधेरे में हवा चिल्लाती रही और पानी के थपेड़े पौधों को रौंदते रहे। फसल और कोठरी पूरी तरह नष्ट हो गए। कुछ दिन बाद तूफान खत्म हुआ। फिर आसमान साफ हुआ और सूरज दुबारा से चमका। परंतु तब तक खेतों की पूरी फसल उजड़ चुकी थी।

"गनीमत है कि बच्चा तो सुरक्षित है," एलिस ने कहा। "मैं भी काफी खुश हूँ," जैक ने कहा। "कम से कम तूफान में हमारा लड़का तो बच गया। हम लोग अपनी मेहनत से 10 बीज भी बचा पाए। यह गम का नहीं खुशी का मौका है। हम दुबारा से एक नई जिंदगी शुरु करेंगे।"

जैक ने 3 बीज भूने। उसने एक बीज खुद खाया। उसने एलिस और अपने लड़के को भी एक एक बीज दिया। बाकी बीजों को उसने जमीन में बो दिया।

फिर जैक और उसकी पत्नी दोनों ने सिर झुकाकर अच्छी फसल के लिए प्रार्थना की।

स्त्रोत - भारत ज्ञान विज्ञान समिति

कालू, उम्र-9 वर्ष, बावरी बस्ती स. मा.

कलाकारी

कृष्णा बैरवा, उम्र-12 वर्ष,
उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

किचन गार्डन

लंच के समय सभी बच्चे व शिक्षक सामूहिक रूप से बैठकर खाना खाते थे। जिसमें देखा गया कि अधिकांश बच्चे रोटी के अलावा प्याज या सूखी मिर्च लाते थे। बहुत कम बच्चों के पास सब्जी होती थी।

माता-पिता से पता चला कि रोज सुबह-शाम क्या बनाए, बाजार में सब्जी बहुत मंहगी है। ऊपर से बच्चे जल्दी स्कूल जाते है। इसलिए इतनी जल्दी सब्जी बनाना भी मुश्किल है। इसी लिए बच्चे कमजोर और कुपोषित रहते हैं।

जब सभी शिक्षक साथियों से बात की तो तयः किया की विद्यालय में शिक्षा के साथ-साथ किचन गार्डन और कुकिंग क्लब पर काम किया जाए। ताकी बच्चों को सब्जी उगाने और बनाने की समझ और अनुभव से जोड़कर समस्या को हल किया जा सके।

इस तरह तयः किया गया कि कक्षा कक्षों के बीच खाली जगह का उपयोग किचन गार्डन के लिए किया जाए और पानी तो हमारे पास है ही।

उक्त विचार को अगले दिन सभा में सभी बच्चों के सामने रखा गया। बच्चों ने सहमती तो दी पर उसकी व्यवहारिकता पर भी सवाल किए। मसलन खाद बीज कहां से आएंगे? इस पर षिक्षकों ने बच्चों से ही कहा, "आप ही बताओं कैसे होगा?"

अब जवाब भी आने लगे, "सर अभी तो सीधे पौध भी लाई जा सकती है। अभी आस-पास के खेतों में सब्जियों की पौध लगाई जा रही है जो हमें कम खर्चे में आसानी से मिल जाएगी। जो नहीं होगा उसे ही बाजार से लाएंगे।" "खाद भी इस समय सभी के घरों में रखा है। जो खेती नहीं करते वे बकरी तो पालते ही हैं तो वे बकरी की देसी खाद ले आएंगे। इस तरह हमारे पास दोनों तरह की खाद हो जाएगी।" किसी ने कहा, "यह ठीक है। अगर सब एक-एक मुठ्ठी खाद भी लाएं तो हमारा काम तो आराम से हो जाएगा और कोई खर्चा करने की भी जरूरत नहीं होगी।"

अगली सुबह सब अपने अपने घरों से कुछ ना कुछ लेकर आए थे। जिसमें कोई पौध, कोई खाद,

कोई बीज तो कोई अन्य सामान लेकर आए। शिक्षकों ने भी अपने-अपने हिसाब से जिम्मेदारी ले ली। इस तरह छुट्टी के बाद सब किचन गार्डन तैयार करने में जुट गए। जिन बच्चों और शिक्षकों की समझ खेती-बाड़ी में अच्छी थी वे बाकी सब को समझाने और मदद करने का काम भी कर रहे थे।

सभी ने दिन प्रतिदिन के हिसाब से अपनी-अपनी जिम्मेदारियां बांट ली थी। देखते ही देखते किचन गार्डन तैयार हो गया।

विज्ञान हो या सामाजिक ज्ञान की कक्षा जब भी कृषी, पशुपालन, मिट्टी, जल, भौजन व पौषण से संबंधित कुछ पढ़ना होता तो शिक्षक और बच्चे किचन गार्डन में जाकर प्रेक्टिकल अनुभव के साथ सीखते पढ़ते। इससे बच्चों की पढ़ाई में भी रूचि बढ़ने लगी।

जब गार्डन में बेंगन, पालक, मूली, टमाटर, गाजर, मटर, मिर्ची आने लगी तो। बच्चे कहने लगे अब इनका क्या करें? यहीं से कुकिंग का काम आरंभ किया गया।

किचन गार्डन की तरह सभी बच्चे अपने अपने घरों से आवश्यक सामग्री थोड़ी-थोड़ी मात्रा में लेकर आए और उन्होंने ना सिर्फ सब्जी बनाई बल्की अन्य व्यंजन बनाने का भी विचार रखा। इस तरह कुकिंग क्लब में हर सप्ताह नई-नई रेसीपी पर काम होता। बच्चे उसको बनाना सीखते और उसके स्वाद के साथ साथ अच्छे और पौष्टिक भोजन प्राप्त करते। इससे उनकी सेहत में भी सुधार होने लगा था। इतना हीं नहीं उन्होने अपनी पॉकेटमनी का सदुपयोग करना भी सीख लिया था। इससे पहले वे इस पैसे से स्वास्थ्य के लिए हानिकारक चीजे खरीदते थे। जिसका असर उनके स्वास्थ्य पर भी होता था।

जब यह बात समुदाय में अभिभावकों को पता चली तो वे भी बहुत खुष हुए। वे अपने बच्चों को 5 या 10 रू. देकर कहते, "अच्छे से सीखकर आना फिर हम घर पर भी बनाएंगे।"

किचन गार्डन और कुकिंक का आईडिया इतना सफल रहा कि अब बच्चे अपने माता-पिता के सहयोग से घरों में भी किचन गार्डन तैयार कर रहे है। जिसमें ग्वार, मेथी, चौला, ककड़ी, शकरकंद, मक्का, लोकी, बालोड़... जैसी सब्जिया ना सिर्फ उगा रहे है। बल्की अपने घरों में नियमित पका भी रहे है। इस एक प्रयास ने बच्चों और उनके पाता-पिता को कम लागत में पौष्टिक भोजन से जोड़ दिया। आज हर घर से बच्चे सब्जी लेकर आने लगे है। समुदाय में जाने पर बच्चे अपने घर में बनाए किचन गार्डन को दिखाते हैं।

तरूण शर्मा, शिक्षक

ज्योति जगा, कक्षा-9, उमंग

बबलू, कक्षा-5, उच्च प्राथमिक विद्यालय खाण्डोज

चिड़िया का बच्चा

एक दिन मैं खेल रही थी। हमारे पास में ही नीम और बबूल का पेड़ था। वहाँ पर दो चिड़ियाँ चहक रही थी। वे चिड़ियाँ बहुत जोर-जोर से चहक रही थी। मैंने सोचा कि ये तो रोज ही चहकती है। पहले तो मैंने उन पर ध्यान नहीं दिया और मैं खेलने में लग गई। लेकिन वे चिड़ियाँ और भी जोर-जोर से चहकने लगी। फिर मैंने देखा तो वहां पर एक चिड़ियाँ का बच्चा जमीन पर पड़ा हुआ था। उस बच्चे को मैंने हाथ में उठाया और उसे वापस चिड़ियाँ के घौसले में रख दिया। उस चिड़ियाँ की किस्मत अच्छी थी कि उनका बच्चा नहीं मरा और वह चिड़ियाँ चुप हो गई। उन्हें देखकर मुझे बहुत खुशी हुई और वहाँ पर फिर काफी देर तक कोई भी चिड़ियाँ की आवाज नहीं सुनाई दी। हम घर पर आ गये।

बहुत दिन बाद एक चिड़ियाँ का बच्चा उड़ता हुआ हमारे घर पर आया। वहाँ कोई चिड़ियाँ भी नहीं थी केवल एक बच्चा अकेला उड़ता-उड़ता मेरे घर पर आ गया। उसे देखकर मुझे उस बच्चे की याद आ गई। मैंने उसे दाना डाल दिया। बच्चे ने दाना चुगा और उड़ गया। अब तो वह चिड़ियाँ का बच्चा रोज आने लगा और मैं उसे रोज देखती और दाना डालती।

कोमल, समूह-सूरज, उम्र-12 वर्ष

आशीर्वाद

एक बार मैं विद्यालय जा रही थी। मैंने देखा कि एक बूढ़ी अम्मा सड़क पार करने के लिए खड़ी थी। मैंने सोचा कि मुझे इस बूढ़ी अम्मा की मदद करनी चाहिए। मैं उसके पास गई और उनसे पूछा, "अम्मा आपको कहाँ जाना है?"

उन्होंने बोला, "मुझे सड़क पार करवा दो।" तो मैंने उन्हें सड़क पार करवा दी और उन्होंने मुझे बहुत सारा आर्शीवाद दिया। मैं बहुत खुश हो गई।

रानू सैनी, उम्र-12 वर्ष, राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय कुतलपुरा मालियान

गोरा माली, कक्षा-7,
उच्च प्राथमिक विद्यालय
उलियाना

माथा पच्ची

1 हरा दरवाजा, लाल मकान, उसके अंदर काले पठान।

2 गड़गड़ो माथो, भड़भड़ो भाटो, पकड़ियो सिंह हो यो अल्लाठो।

3 आकल बेड़ी, साकल बेली, कली-कली में रस।

4 सौ पंखों का मेरा नाम, कोई न भूले मेरा काम।

5 दो भाई, एक टी शर्ट पहने।

गोलमा गुर्जर, उम्र-13 वर्ष, उदय सामुदायिक पाठशाला-गिरिराजपुरा।

हीहीही-ठीठीठी

1 एक मच्छर परेशान बैठा था।

दूसरे मच्छर ने पूछा - भाई क्या हुआ, तुझे?

पहला मच्छर बोला - यार गजब हो रहा है। चूहेदानी में चूहा, साबुनदानी में साबुन होता है पर मच्छरदानी में मच्छर की जगह आदमी घुसा हुआ है।

2 एक भैंस जंगल में घबराई हुई भागी जा रही थी। रास्ते में एक चूहे ने पूछा क्या हुआ बहिन, कहाँ जा रही हो?

भैंस - जंगल में हाथी को पकड़ने पुलिस आई हुई है।

चूहा - तो तुम क्यों भाग रही हो, तुम तो हाथी नहीं हो?

भैंस - ये इंडिया है मियां, पकड़े गये तो 20 साल तो ये साबित करने में लग जायेंगे कि मैं हाथी नहीं भैंस हूँ। हट तेरी की।

ममता जागा, शिक्षिका, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।

पदमा माली, कक्षा-8, राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय जमुलखेड़ा

कुछ हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ

लगता है मिजाज मौसम

का बदल रहा है।

देखो मिटे निशां मेरे कदमों के

कोई कदम उन पर चल रहा है। ...

विष्णु द्वारा शुरू की गई इस कविता को पूरा करके **मोरंगे** को भेजें।

सपना बैरवा, उम्र-12 वर्ष, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

एक सोनी नाम की लड़की थी। वह ज्यादा सपने देखती थी। उसे दिन में भी सपने आ जाते थे। वह सपनों में ही चलने लग जाती थी। उस लड़की को एक दिन सपना आया जो बहुत ही अजीब और डरावना था। वह पलंग पर हिलने लगी और बोलती कि मुझे .....

रामवीर गुर्जर, उम्र-12 वर्ष, समूह-झरना द्वारा शुरू की कई बात का जवाब देते हुए कहानी को पूरा करके **मोरंगे** को भेजें।

दीपेश गौड़, समूह-क्रील, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

पहेलियों के ज़वाब -

1. तरबूज 2. घट्टी 3. जलेबी 4. कॉपी 5. चना

आरती, उम्र-11 वर्ष, बावरी बस्ती स. मा.